International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अमीर खुसरो भावनात्मक एकता के अग्रदूत

डॉ. सविता टाक
सहायक आचार्य हिंदी
मा. ला. व. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा

भारत की पुण्यभूमि ने ऐसी अनेक पुनीत विभूतियों को जन्म दिया; जिनका योगदान भारत में ही नहीं, संसार के कोने-कोने में गूँज रहा है। अमीर खुसरो अद्भुत प्रतिभा के धनी महामानव थे। मध्ययुगीन भारतीय इतिहास में अमीर खुसरो का नाम साहित्य, इतिहास, राजनीति, धर्म, अध्यात्म आदि के संदर्भ में गौरव के साथ लिया जाता है। अमीर खुसरो अपने युग के बहुमुखी व्यक्तित्व संपन्न पुरुष थे।

अमीर खुसरो इस देश के चेतनावादी, मानवतावादी, समाजवादी महापुरुषों में से एक हैं; जिन्होंने इस देश की महती सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया था। अमीर खुसरो खड़ी बोली के प्रथम कवि बहुमुखी प्रतिभा के धनी, उदार सूफी साधना के प्रवर्तक, हिंदू मुस्लिम एकता के अग्रदूत, सांस्कृतिक समन्वय के सेतुबंध भारतीय संगीत के उन्नायक ही नहीं; बल्कि 'जननी जन्मभूमि' के प्रति अगाध प्रेम रखने वाले पक्के राष्ट्रप्रेम थे। भारतीय इतिहास के 700 वर्षों में ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन अन्य किसी व्यक्तित्व में दुर्लभ है।

मध्ययुग में सांस्कृतिक समन्वय की चेतना से प्रेरित होकर जिन सूफी संतों ने हिंदू-मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और भावात्मक एकता का मार्ग प्रशस्त किया। उदारचेता सूफी संतों की परंपरा में अमीर खुसरो अग्रदूत है। धार्मिक और सांप्रदायिक संकीर्णता को मिटाकर प्रेम और सौहार्दपूर्ण, सामाजिक वातावरण के सृजन में अमीर खुसरो का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। उनका उदार, विशाल, मानवतावादी

दृष्टिकोण आज भी अनुकरणीय है। अमीर खुसरो का मध्ययुगीन वह महान संदेश आज की परिस्थितियों में और भी अधिक सामायिक और सार्थक है।

अमीर खुसरो का ऐसा युग था, जिसमें साहित्य के भाग्य विधाता राजनीति और धर्म के भाग्य विधाताओं की कृपा-कटाक्ष के इच्छुक एवं उनके इंगितापेक्षी होते थे। स्वयं अमीर खुसरो गुलाम वंश के पतन और तुगलक वंश के शासकीय उत्थान के समय दिल्ली दरबार से सम्बद्ध थे; लेकिन उनके व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य इस बात में निहित है, कि उन्होंने ना कभी राजनीति की पूजा की और ना कभी धर्म की धकापेल में पड़े। जल में कमल की तरह के दरबार में रहे और जनता की भाषा में जनता के लिए लिखते रहे। व्यस्त दरबारी जीवन में भी इस प्रकार अपने दृष्टिकोण को अत्यंत व्यापक बनाने की क्षमता खुसरो को वास्तव में अपने मानवतावादी दृष्टिकोण ने ही दी। वे भारतीय मानवतावादी काव्य परंपरा के आदि प्रवर्तकों में से एक थे। उनका काव्य उस स्तर पर रचा गया है; जहाँ मनुष्य सब प्रकार की संकुचित सीमाओं को भूलकर समानता और स्वाभाविक रूप से मानवतावाद का भाव स्वीकार करते हैं।

खुसरो के हाथ में मानवतावादी स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वह परिस्थितियों में निहित बुराइयों का विरोध कर, कमियों का निर्देश कर, मानव समाज के मंगल के लिए कार्य करते हैं। बिना किसी अवरोध के मानवता का साथ देते हैं। साधारण जनता के प्रति उनका उदारतापूर्ण व्यवहार मानवतावाद की प्रथम पीठिका है। वे साधारण वर्ग में जन्म लेकर जनकवि बने। निर्धनों के प्रति उनका व्यवहार बहुत ही सौम्य, मृदुल तथा मधुर था।

खुसरो ने समकालीन सामाजिक परिस्थितियों एवं अनुभवों से समझ लिया था कि आर्थिक वैषम्य के कारण ही मनुष्य में भेदभाव था। इस भेदभाव के कारण समाज में अनेक प्रकार के अत्याचार हो रहे थे। इन अत्याचारों से तत्कालीन समाज भूखा और पीड़ित था। खुसरो के शब्दों में :

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

" बाल नुचे कपड़े फटे, मोती लिए उतार।

अब विपता कैसे बनी, जो नंगी कर दी नार।"

नैतिकता की दृष्टि से समाज पतन ओर उन्मुख था। लोग नैतिकता को बिल्कुल भूलकर छल-कपट का व्यवहार कर रहे थे। खुसरो सच्चे अर्थ में समस्त मानव जाति को समान मानने वाले समाज सुधारक बने।

अमीर खुसरो के व्यक्तित्व में उनकी प्रमुख विशेषता समन्वय की भावना थी। अपने इसी गुण के कारण अमीर खुसरो विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों में लोकप्रियता प्राप्त कर सके। गुलाम वंश के कई बादशाहों का उन्हें संरक्षण प्राप्त था।

हिंदू-मुस्लिम एकता पूर्वमध्य युग की एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या थी। बाहर से आए हुए मुसलमान इस देश में बसने लगे थे। उनका संबंध देश के लोगों के साथ धीरे-धीरे सौहार्दपूर्ण होने लगा था। सूफी संतों ने हिंदू-मुसलमानों के बीच की खाई पाटने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विशाल व्यक्तित्व एवं उदार धार्मिक दृष्टिकोण के कारण बहुत से हिंदू उनके शिष्य हो गए। भारतीय भक्ति आंदोलन में निर्गुण भक्ति आंदोलन ने धार्मिक एवं सांप्रदायिक संकीर्णता को कम कर दिया; फलस्वरूप हिंदू-मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता कम होने लगी और दोनों एक दूसरे के समीप आने लगे।

अमीर खुसरो कला-मर्मज्ञ, कवि, लेखक थे। उदारता एवं सहिष्णुता उनके स्वभाव की विशेषताएँ थी। उनकी पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों ने उनके इन गुणों के विकास में योग दिया। उनके पिता सैफुद्दीन महमूद चंगेज खां की सेना के साथ भारत आए थे। बाद में अल्तमश के दरबार में नौकर हो गए थे। इनके नाना इमादुल-मुल्क साहित्य और कला के प्रेमी थे।

अमीर खुसरो ने हिंदू-मुसलमानों में सौहार्द स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि के रूप में देखा और बाहर से आए हुए मुसलमानों में इस भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी मसनियों में यहाँ की भाषाओं, स्त्री-पुरुष, प्रकृति के दृश्य, पशु-पक्षियों का वर्णन किया। उन्हें फारसी की तुलना में उच्च बतलाया।

अमीर खुसरो का भारत के प्रति स्वदेश प्रेम गौरव और गरिमा से मंडित है; जिसे पढ़कर किसी भी हिंदुस्तानी के मन में आत्म-गौरव का भाव जागृत हो जाता है। डॉ. ताराचंद ने अपनी पुस्तक 'खुसरो और हिंदुस्तान' में खुसरो की भारत संबंधी मान्यताओं के बारे में कहा है कि, "खुसरो एक ऐसी समन्वित संस्कृति की उपज थे, जो भारतीय जनजीवन तथा भारतीय परिवेश के अन्न जल से निर्मित संसृति कही जा सकती है।" उन्होंने लिखा "भारत संसार के सब देशों से श्रेष्ठ और खुरासान, कंधार, रोम और ईरान की अपेक्षा अत्यधिक सुंदर है। भारत देश स्वर्ग से भी रमणीय स्थान है। वास्तव में अमीर खुसरो को इस बात का गर्व है कि उनका जन्म भारत जैसे एक विशाल सुंदर और समृद्ध देश में हुआ।"

खुसरो सच्चे अर्थों में संत क्रांतदर्शी कवि, साहित्यकार और महामानव थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अमीर खुसरो का कृतित्व अपने युग में उस संदेश का वाहक नहीं हो सका, जो वे मानव मात्र के लिए देना चाहते थे। बादशाहों के कूटनीतिक छलों से बचकर चलने पर भी खुसरो अपने को नितांत अछूता नहीं रख सके। राजनीति से दूर रहकर भी वे राजनीति से उत्पन्न कष्ट का साक्षात्कार करते रहे। धर्मप्रियता, धर्मनिरपेक्षता में सर्व-धर्म समभाव का ऐसा व्यापक संदेश, जो उनकी लोकप्रियता का रहस्य कहा जा सकता है। खुसरो एक सच्चे भारतीय प्रतिभा का स्मरण है। जातीय जीवन में स्वदेशाभिमान,

आध्यात्मिकता और लोकमंगल की स्थापना खुसरों की कृतियों में सर्वत्र व्याप्त हैं :

"सावन भादो बहुत चलत है, माघ पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहें, तू बूझ पहेली मोरी।"

खुसरो के संपूर्ण साहित्य का मूल मंत्र समन्वय ही रहा है। भाषा के क्षेत्र में, सांस्कृतिक क्षेत्र में, कविता के क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में और अन्य सभी क्षेत्रों में मानवतावादी दृष्टिकोण रखकर सब का समन्वय करना ही उनका महान लक्ष्य रहा है। वर्तमान हिंदी शैली पहली बार अमीर खुसरो की काव्य रचना में ही हमें दृष्टिगत हुई। राष्ट्रभाषा के रूप में जनभाषा हिंदी की परिकल्पना का श्रेय अमीर खुसरो को ही दिया जाना चाहिए। पहेलियाँ, मुकरियाँ, सखुन आदि के लिए उनका नाम हिंदी-उर्दू साहित्य में प्रसिद्ध है।

अमीर खुसरो ने अपने काव्य के माध्यम से मनुष्य को बंधुत्व और समता का नारा दिया; जो आज भी देदीप्यमान है। संपूर्ण मानव जाति के लिए महान आदर्श की अवधारणा, देशकाल, जाति-निरपेक्ष मानव की परिकल्पना मानवतावादी खुसरो की सबसे बड़ी देन है।

संदर्भ-पुस्तकें

1 . हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेंद्र
2 . अमीर खुसरो का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : डॉ परमानंद पांचाल
3 . हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : द्वारिका प्रसाद सक्सेना